एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

तरबूज की खेती

(*भरत कुमार)
श्रीनाथजी कृषि महाविद्यालय, नाथद्वारा (राजस्थान)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: chouhan.bharat58@gmail.com

फल के रूप में तरबूज की खेती की जाती है, भारत में ज्यादातर जायद सीजन में तरबूज की खेती की जाती है। तरबूज का ऊपरी भाग हरे रंग का तथा अंदर से लाल वह कुछ सफेद पीली वैरायटी अभी पाई जाती है गर्मियों में तरबूज का अधिक उपयोग किया जाता है वह कच्चे के रूप में इसका इस्तेमाल सब्जी बनाकर भी किया जाता है। गर्मियों में तरबूज की बाजार में बहुत मांग होती हैं जिससे किसान जायद सीजन में अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। तरबूज का स्वाद बहुत ही स्वादिष्ट होता है तथा 90% तक जल की मात्रा भी पाई जाती है। तरबूज का फल बहुत पोषक तत्वों से भरपूर होता है जो शरीर की कई परेशानियों को दूर करने में काम आता है। तरबूज के फल में फाइबर, पोटेशियम, आयरन और विटामिन ए, बी और सी से समृद्ध होता है इसमें लाइकोपिन तत्व भी पाया जाता है जो एंटीऑक्सीडेंट का काम करता है।

तरबूज के स्वास्थ्य संबंधी फायदे:- पाचन हृदय रोग वजन घटाने के लिए हाइड्रेट कैंसर रोग प्रतिरोधक क्षमता दमा रक्तचाप नियंत्रण आंखों के लिए मधुमेह मसूड़ों गर्भावस्था के दौरान बालों आदि में सुधार करता है।

भारत में तरबूज उत्पादन:- भारत व्यापारिक तौर पर तरबूज की खेती करता है इस कारण उत्पादन भी अधिक मात्रा में होता है। भारत के कर्नाटक ,पंजाब ,राजस्थान, हरियाणा ,मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और गुजरात आदि राज्यों में इसकी खेती होती है । राजस्थान में सर्वाधिक उत्पादन टोंक जिले में होता है।

जलवायु एवं मिट्टी:- तरबूज की खेती के लिए गर्म और औसत आर्द्रता वाले क्षेत्र अच्छे रहते हैं , तरबूज का पौधा सर्दियों व गर्मियों दोनों ही मौसम में सहनशील होता है लेकिन सर्दियों में पाला पौधों के विकास के लिए हानिकारक होता है अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेंटीग्रेड और न्यूनतम तापमान 18 डिग्री सेंटीग्रेड मैं पौधों की बढ़वार अच्छी होती है , वही तरबूज की खेती के लिए बलुई मिट्टी अच्छी रहती है जिस मृदा का पीएच मान 5.5 से 6.5 के मध्य होता है उसमें फसल का उत्पादन लिया जा सकता है।

खेत की तैयारी:- खेत में पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए जुताई करने के बाद खेत की मिट्टी को धूप लगने के लिए उसे थोड़ा समय खुला छोड़ देना चाहिए फिर उसके बाद 15-20 टन पुरानी गोबर की खाद डालकर देसी हल या कल्टीवेटर चलाकर जुताई कर दी जाती है गोबर की खाद मिलाने के बाद एक सिंचाई करके थोड़े समय के लिए छोड़ देते हैं उसके बाद ऊपर से मिट्टी सूख जाए तब एक जुताई फिर से खेत में की जाती है ऐसा करने से मिट्टी भुरभुरी हो जाती है।

बुवाई का समय:- उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में तरबूज की बुवाई फरवरी में की जाती है, तो वहीं नदियों के किनारों पर खेती करते वक्त बुवाई दिसंबर से मार्च तक करनी चाहिए।

बैड तैयार करना, बुवाई विधि:- खेत को तैयार होने के बाद 60 सेंटीमीटर चौड़ाई 15 से 20 सेंटीमीटर ऊंचाई में बेड तैयार करने चाहिए क्यारियों को 4 से 5 फीट फीट का अंतर रखना है उसके बाद ड्रिप सिस्टम को बेड पर बिछाना है इसके बाद 4 फीट चौड़ाई के 20-25 माइक्रोन मोटे प्लास्टिक मल्च को बेड पर फैलाकर बिछा देते हैं। इसके बाद नालियों के दोनों किनारों पर लगभग 60 सेंटीमीटर की दूरी पर 2 से 3 बीज बोये जाते हैं।

किस्मे:- तरबूज की कई उन्नत किस्में होती है जो कम समय में तैयार हो जाती है और उत्पादन भी बेहतर देती हैं। इन किस्मों में प्रमुख किस्में इस प्रकार से हैं-

क्रम संख्या	उन्नत क़िस्म	उत्पादन समय	उत्पादन
1.	शुगर बेबी	85 से 90 दिन	200 से 250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
2.	पूसा बेदाना	85 से 90 दिन	200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
3.	आशायी यामातो	85 दिन	225 से 240 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
4.	न्यू हेम्पशायर मिडगट	85 दिन	250 से 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
5.	दुर्गापुरा केसर	85 से 90 दिन	220 से 250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
6.	अर्का ज्योति	95 से 100 दिन	350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
7.	अर्का मानिक	110 से 115 दिन	60 टन प्रति हेक्टेयर

बीज की मात्रा:- तरबूज की खेती के लिए बीज 4 से 5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है

खाद व उर्वरक:- 15 से 20 टन गोबर की खाद,80 किलोग्राम नाइट्रोजन 60 किलोग्राम फास्फोरस 60 किलोग्राम पोटाश नत्रजन की मात्रा को बुवाई के समय आधी मात्रा के साथ फास्फोरस पोटाश की पूरी मात्रा खेत तैयारी के समय मिट्टी में मिला देते हैं शेष नत्रजन बुवाई के 25 दिन के बाद देना चाहिए।

सिंचाई:- तरबूज की खेती नदियों के किनारे पर कर रहे हैं तो बहुत ही कम या नहीं के बराबर जरूरत होती हैं पहली सिंचाई बीज बुवाई के तुरंत बाद तथा अंकुरित होने के बाद 7 -15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। तरबूज के फलों की छुड़ाई तरबूज रोपाई के 80 से 85 दिन बाद तोड़ना प्रारंभ हो जाता है फलों से लगा डंठल सुखना शुरु होता दिखाई दे, फल का रंग हल्का पीला होता है तब तूडाई की जा सकती है प्रत्येक किस्म के अनुसार आकार व रंग पर निर्भर करता है कि फल पक चुका है। दूर के बाजार में यदि भेजना हो तो पहले ही फलों को तोड़ना चाहिए।

उपज:- तरबूजे की पैदावार किस्म के अनुसार अलग-अलग होती है । साधारणत: तरबूजे की औसतन पैदावार 200-600 क्विंटल प्रति हेक्टर फल प्राप्त हो जाते हैं।

भण्डारण:- तरबूजे को तोड़ने के बाद 2-3 सप्ताह आराम से रखा जा सकता है। फलों को ध्यान से ले जाना चाहिए। हाथ से ले जाने में गिरकर टूटने का भी भय रहता है। फलों को 2 डी०सें०ग्रेड से 5 डी०सें०ग्रेड तापमान पर रखा जा सकता है। अधिक लम्बे समय के लिए रेफरीजरेटर में रखा जा सकता है।